तालीम की बुनियाद

श्रमभारती खादीग्राम के शिक्षण प्रयोग के अनुभव

❑ डा. अवधप्रसाद

गांधी जी और डॉ. जाकिर हुसैन के शिक्षा-चिंतन और बुनियादी शिक्षा प्रयोग पर प्रो. कृष्ण कुमार और प्रो. मोहम्मद तालिब के विचार आप पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं । यहां हम गांधी जी के शिक्षा-दर्शन से प्रेरित श्रम भारती खादीग्राम के शिक्षण-प्रयोग के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं । डॉ. अवध प्रसाद ने स्वयं एक विद्यार्थी के रूप में बुनियादी शिक्षा के ये अनुभव अर्जित किये थे जो आज भी उनकी स्मृति में विद्यमान हैं ।

यहां तालीम और शिक्षा दोनों शब्दों को समानार्थी मानकर चल रहे हैं । शिक्षा की एक से अधिक परिभाषा हो सकती हैं - उनमें विचार भिन्नता भी हो सकती है । यदि सामान्य अर्थ के रूप में समझना चाहें तो शिक्षा के दो स्तर मान सकते हैं - एक अक्षर ज्ञान की शिक्षा जिसमें उपलब्ध ज्ञान को पढ़ने की योग्यता का विकास करना है । दूसरा, जीवन की शिक्षा- इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास प्रमुख है । व्यक्तित्व के विकास से तात्पर्य सुन्दर एवं सुसंस्कृत समाज के अनुरूप किसी व्यक्ति को विकसित होने का अवसर प्रदान करने से है । शिक्षा के सिद्धांत एवं व्यवहार के अनेक प्रयोग होते रहे हैं, हो रहे हैं । देश की शिक्षा को नयी दिशा देने के लिए किये गये प्रयोगों में गैर सरकारी स्तर पर किये गये प्रयोगों का प्रमुख स्थान है । सरकारी स्तर पर भी शिक्षा में सुधार के नाम पर अनेक शिक्षा आयोग एवं समितियां बनी लेकिन इन आयोगों का व्यावहारिक लाभ नहीं के बराबर देखने में आता है । सरकार ने अनेक बार उत्साह में आकर शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रयोग भी प्रारम्भ किये जो कि कुछ ही वर्षों में पुरानी पटरी पर चले गये। उदाहरण के लिए बहुउद्देशीय विद्यालय, बिहार, गुजरात आदि राज्यों में बुनियादी शाला, उत्तर बुनियादी शाला (बेसिक स्कूल, पोस्ट बेसिक स्कूल) आदि के प्रयोग किये गये । इन प्रयोगों के साथ गांधी जी द्वारा प्रारम्भ की गई नयी तालीम या बुनियादी शिक्षा का नाम जोड़ा गया। गैर सरकारी स्तर पर नयी तालीम या बुनियादी शिक्षा का प्रयोग गांधी जी ने प्रारम्भ किया और स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान सेवाग्राम नई तालीम का प्रमुख प्रयोग केन्द्र बना । इसके लिए गांधी जी ने अ.भा. तालीमी संघ की स्थापना की । सेवाग्राम में इसके प्रमुख प्रयोगकर्ता श्री ई. डब्लु. आर्यनायकम एवं श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम थे । सेवा ग्राम - वर्धा के नयी तालीम विद्यालयों के साथ आचार्य विनाबा भावे, आचार्य काका कालेकर आदि भी शामिल थे । डा. जाकिर हुसैन भिन्न संदर्भ में इस प्रयोग से जुड़े । उन दिनों राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना भी हुई जिनमें काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ आदि प्रमुख हैं। इन्हें नयी तालीम के प्रयोग नहीं मानना चाहिये । सेवाग्राम नयी तालीम के प्रयोग श्री आर्यनायकम आशादेवी परम्परा तक सघन रूप में चलते रहे । इन प्रयोगों का विश्लेषण अलग विषय है ।

आजादी के बाद नई तालीम के प्रयोग गैर सरकारी स्तर पर अनेक राज्यों में अनेक संस्थाओं द्वारा आरंभ किये गये । इन प्रयोगों में बिहार के श्रम भारती, खादी ग्राम तथा उत्तरप्रदेश में सेवापुरी का प्रयोग प्रमुख था । दोनों प्रयोगों को नयी तालीम के प्रयोगों का आधार स्तम्भ मान सकते हैं । प्रस्तुत आलेख में मैं श्रमभारती खादी ग्राम के प्रयोग के अनुभव पाठकों के सम्मुख रखना चाहूंगा। इस प्रयोग के प्रमुख प्रयोगकर्ता श्री धीरेन्द्र मजूमदार एवं आचार्य राममूर्ति थे । प्रयोग अवधि में निष्ठावान शिक्षकों का एक समूह था तथा अनेक राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों का मार्गदर्शन प्राप्त था। हम इस प्रयोग में बाल विद्यार्थी के रूप में शामिल थे । यह संयोग ही माना जायेगा कि जब हम श्रमभारती खादीग्राम की शिक्षण शाला में शामिल हुए उसके पहले मैं किसी विद्यालय में नही गया था । उम्र थी 8-9 वर्ष - इस उम्र तक विद्यालय में जाना भी अर्थ रखता था। हमारे अभिभावक सामान्य विद्यालय की शिक्षा के प्रति उत्साहित नहीं थे, संतुष्ट नहीं थे। इस परिस्थिति में घर पर ही पढ़ते थे । परिवार के लोग ही पढ़ाते थे । वर्ष 1953-54 में श्रमभारती खादीग्राम विद्यालय की स्थापना हुई तो हमें वहां भेज दिया गया । इस प्रकार बाल शिक्षण की श्रेणी से ही नई तालीम में सहभागिता का क्रम 1954 में प्रारंभ हुआ । बुनियादी स्तर की शिक्षा अवधि चार वर्ष (8 वीं तक) रही । अर्थात वर्ष 1954 से 57 तक ।

अभिनव प्रयोग

श्रम भारती का नई तालीम विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग था । विद्यालय का नाम था 'श्रम शाला' । श्रम पर आधारित इस विद्यालय में बालक के मन में श्रम की पूजा का भाव प्रतिष्ठित किया गया । श्रम से तात्पर्य शारीरिक श्रम से है । श्रम मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है, वह समाज की रीढ़ भी है । शारीरिक श्रम के बिना समाज रूपी शरीर खड़ा नहीं रह सकता, जिन्दा नहीं रह सकता है । श्रम जाति, धर्म, बड़ा, छोटा सबके लिए समान महत्व का है। श्रम भारती में शारीरिक श्रम दैनिक जीवन का अभिन्न अंग था। सबके लिए अनिवार्य था, अतिथियों के लिए भी । हम बाल विद्यार्थियों के साथ हमारे गुरूजन हमसे अधिक शारीरिक श्रम करते थे। मुझे याद है कि पूज्य धीरेन्द्र मजूमदार, आचार्य राममूर्ति पूरे समय शारीरिक श्रम करते थे । श्रम के समय घन्टों फावड़ा, गैंता चलाना आचार्य राममूर्ति जी का दैनिक क्रम था। चार घन्टे श्रम के साथ चार घन्टा बौद्धिक शिक्षण भी दैनिक कार्यक्रम का अंग था।

श्रम आधारित श्रम शाला में प्राथमिक शिक्षा जीवन शिक्षण की बुनियाद थी। यह प्रयोग चार वर्षों तक चला । इस प्रयोग की महत्ता उस समय हम छात्रों को नहीं महसूस हुई । जैसे–जैसे समय बीतता गया, इस चार वर्ष के शिक्षा प्रयोग का महत्व समझ में आने लगा। इस शिक्षण प्रयोग से जुडे छात्र एवं शिक्षक आज अपने–अपने क्षेत्र में, अपने जीवन में औरों से भिन्न कार्य कर रहे हैं ।

भेदभावपूर्ण समाज में भेदरहित शिक्षण के प्रयोग के महत्व का भान आज अधिक है । पास पड़ोस के गांव के गरीब, मजदूर वर्ग, अछूत समझे जाने वाले बालकों के साथ तथा कथित उच्च वर्गीय बालक को समान रूप से श्रमशाला में भागीदार बनने का यह प्रयोग अनोखा था। यह तो प्रयोगकर्ता के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि उस समय इस भेद का भान नहीं हुआ । एक भेद के भान का स्मरण आज भी हो रहा है । श्रमभारती में कक्षा का विभाजन नहीं था। छात्र के ज्ञान के स्तर के अनुसार बौद्धिक कक्षा लगती थी। मुझे याद है हमारे साथ आस-पास के गांवों के अधिक उम्र के छात्र भी थे। यह छोटे बच्चों को अखरता था और बड़े छात्रों के लिए उपहास का अवसर भी देता था। गुरूजनों ने ऐसा वातावरण बना रखा था कि सामाजिक (जातीय) भेदभाव, आर्थिक सम्पन्नता का अभिमान, बड़े छोटे के भेद लुप्त हो गये थे । इस प्रकार के भेद की समाप्ति का महत्व इस कारण अधिक था क्योंकि बौद्धिक कक्षा के साथ शारीरिक श्रम करना दोनों का समान महत्व था । यह कार्य तथाकथित संभ्रान्त परिवार के बालकों को मानसिक पीड़ा का अवसर प्रदान करता था । इस प्रयोग में कक्षा का परम्परागत विभाजन नहीं था। इस स्थिति में हमें यह नहीं ज्ञान था कि हम किस कक्षा के छात्र हैं। स्थिति यह थी कि गणित में पांचवी कक्षा में बैठते तो भाषा में आठवीं तथा इतिहास में सातवीं कक्षा में। हम यह कहने की स्थिति में हैं कि बालक के बौद्धिक स्तर एवं श्रम क्षमता के अनुरूप कक्षा का निर्धारण था ।

यहां एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा पर खर्च का है । हम सभी आवासीय छात्र थे । हमारा स्थानीय निवास श्रमभारती का नयी तालीम विद्यालय था । शिक्षा स्वावलम्बी हो इस दृष्टि से यह अनोखा सहयोग था । सभी छात्र चार घन्टा श्रम करते । अन्य कार्यो में भी मदद करते थे । वस्त्र स्वावलम्बन की दृष्टि से कताई-बुनाई करते थे । लेकिन कम उम्र के विद्यार्थी के लिए वस्त्र स्वावलम्बन कठिन था । श्रम से पूरा खर्च निकलना भी संभव नहीं था । इस परिस्थिति में भोजन वस्त्र पर होने वाले खर्च का आधा हिस्सा अभिभावकों से लिया जाता था, शेष की पूर्ति हमारे शारीरिक श्रम से होती थी ।

चार घन्टे की बौद्धिक शिक्षा में समग्रता थी । प्राय: सभी विषयों की शिक्षा व्यवस्था थी । योग्य शिक्षक थे। मुख्य विषय थे, भाषा, इतिहास-संस्कृति, गणित, विज्ञान । हमारे भाषा के शिक्षक थे श्री रूद्रभान भाई (अच्छे साहित्यकार), इतिहास, सामयिक विषय एवं सांस्कृतिक विषय आचार्य राममूर्ति जी पढ़ाते थे । इसी प्रकार गणित, विज्ञान, कृषि विज्ञान के पृथक शिक्षक थे । शिक्षण पद्धति समवाय की थी । प्रात:कालीन चार घन्टे के शारीरिक श्रम की अवधि हमारे बौद्धिक शिक्षण का आधार थी। खास कर गणित, सामान्य विज्ञान, कृषि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीवविज्ञान आदि के बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान (उदाहरण) शारीरिक श्रम के दौरान हो जाता था जिसके आधार पर बौद्धिक कक्षा चलती थीं। उदाहरण के रूप में सूत कताई - बुनाई की प्रक्रिया के माध्यम से वस्त्र का इतिहास, उसके प्रकार, कपास की कहानी, उत्पादन पद्धति, वस्त्र उत्पादन की प्रक्रिया आदि का ज्ञान शिक्षण का अंग था । वर्तमान में शायद टेक्सटाइल डिजाइन की शिक्षा में भी इस प्रकार की जानकारी नहीं दी जाती है। कृषि विज्ञान में फसल चक्र, फसलों के पोषण के स्रोत्र, नैत्रजन, फास्फोरस, पोटास की उपयोगिता । विभिन्न फसलों के उगाने की विधि, स्थानीय स्तर पर खाद की उपलब्धता एवं उसके निर्माण की पद्धति आदि । कृषि के बारे में प्रारंभिक ज्ञान इतना ठोस था कि आज के कृषि स्नातक उस स्तर की इतनी व्यावहारिक पकड़ नहीं रखते हैं । इसी प्रकार वनस्पति शास्त्र,

गणित आदि की शिक्षा भी दैनिक शारीरिक श्रम के साथ जुड़ी हुई थी ।

शिक्षण में समवाय पद्धति का जितना व्यावहारिक स्वरूप यहां था वह आज लुप्त हो चुका है। इस प्रयोग में एक अन्य विशेषता भी थी - गुरू एवं शिष्य में पारिवारिकता। शिक्षण में वैज्ञानिकता, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता के साथ पारिवारिकता का उत्तम समन्वय यहां के प्रयोग की विशेषता थी जितने भी विद्यार्थी, शिक्षक एवं उनके परिवार थे उनके बीच पारिवारिक रिश्ते बन गये थे। इन रिश्तों में पारिवारिक संबोधन था जो आज तक कायम है। उम्र का ध्यान रखते हुए सहज भाव से चाचा, चाची, मौसा, मौसी, भाई, दीदी, दादा आदि के संबोधन बन गये थे। संस्था में अनेक व्यक्ति ऐसे थे जिनका पूरा परिवार इस प्रयोग से जुड़ा था। इनमें श्री सिद्धराज ढड्ढा का परिवार भी था। इनके लड़के श्री अशोक ढड्ढा उत्तर बुनियादी में थे जबकि पुत्री श्रीमती आशा पूर्व बुनियादी (श्रमशाला) की छात्रा थी। इसी प्रकार आचार्य राममूर्ति, श्री शैलेश बन्धोपाध्याय, श्री पारस भाई, श्री रविन्द्र उपाध्याय, श्री नारायण भाई, श्री रूद्रभान भाई आदि अनेक व्यक्तियों का पूरा परिवार इस प्रयोग में शामिल था।

इस प्रयोग में शामिल परिवारों की संख्या का अंदाज लगाने का प्रयास करता हूं तो संख्या एक सौ से ऊपर पहुंच जाती है। ये परिवार गजब के भावनाशील थे, विचार के पक्के एवं अपने धुन के धनी थे जो कि आज तक कायम हैं । इन पर कबीर का यह कथन सटीक बैठता है कि 'जो घर फूंके आपणों चले हमारे साथ ' । इन परिवारों के बारे में आज सोचता हूं तो पाता हूं कि प्रयोग में शामिल अधिकांश परिवार इस रास्ते पर आगे चलते रहे, चल रहे हैं । शिक्षण के इस प्रयोग में सामाजिक भेद-भाव रहित जातीय संकीर्णता से मुक्त जीवन का अभ्यास भी शामिल था । मुझे यह साफ महसूस होता है कि श्रमशाला एवं उत्तर बुनियादी और इस प्रकार पूरा श्रमभारती सामाजिक भेदभाव से मुक्त था। कौन किस जाति का है इसका भाव हम छात्रों में बिल्कुल नहीं था क्योंकि एक दूसरे के साथ संबोधन पारिवारिक था - जातीय सीमाओं का भान ही नहीं था।

शिक्षण काल में डायरी स्वचिंतन का माध्यम थी, और दैनिक कार्यों की आत्म समीक्षा का माध्यम भी । दिनभर जो कुछ भी किया,सोचा, चिंतन किया उसको सत्य रूप में लिखना व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है । डायरी में व्यक्तिगत राग द्वेष लिखना शामिल था। मुझे याद है डायरी में शिक्षकों की बुराई, छात्रों में उपजे आपसी राग द्वेष भी शामिल थे। यह शिक्षक का गुण ही मानते हैं कि वे इसका बुरा नहीं मानते थे – वह उनके आत्म चिंतन में सहायक होता था। शिक्षक भी अपनी डायरी लिखते थे और जहां तक मुझे स्मरण है उनकी डायरी पर चर्चा भी होती थी। शिक्षकों की डायरी श्री धीरेन्द्र मजूमदार एवं आचार्य राममूर्ति जी द्वारा पढ़ी जाती थी और शिक्षकों की सभा में उस पर चर्चा होती थी ।

श्रम भारती खादी ग्राम में शिक्षण की एक अन्य विशेषता स्पष्ट तौर पर सामने दिखती है । वह है श्रम के मूल्य की स्थापना और दैनिक जीवनोपयोगी कार्यों की विविधता का शिक्षण दिया जाना । सभी प्रकार के कार्यों का समान मूल्य है ; इस सिद्धांत की स्थापना का यह अनोखा प्रयोग था । यह प्रयोग विश्व के किसी भी वैचारिक प्रयोग से आगे था । साम्यवाद की आदर्श कल्पना से भी आगे । यहां केवल कार्य कि विविधता को गिनाना ही संभव है । वहां जो कार्य शिक्षण का अंग था उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं- शौचालय की सफाई, घर-बाहर की सफाई, बरतन साफ करना, अनाज साफ करना, गोबर उठाना, मृत पशु का चमड़ा निकालना तथा उसका खाद बनाना, हड्डी का खाद बनाना, खेती संबंधी सभी प्रकार के कार्य विभिन्न प्रकार के उद्योग (लकड़ी का फर्नीचर, लोहे का काम, आदि) आदि अनेकों प्रकार के कार्य सभी बिना भेद भाव के करते थे। कार्य का दूसरा पक्ष भी था व्यक्ति (बालक) का सांस्कृतिक विकास जो कि सर्वांगीण विकास का अभिन्न अंग था। इस प्रकार की प्रवृतियां भी अनेक थीं, जैसे - खेल-कूद (बीसों प्रकार के खेल), संगीत, वाद्य सीखना, नाटक नृत्य आदि। प्राय: सभी बालक इसमें सहभागी थे। लेकिन इन कार्यों में सबकी सहभागिता समान होना संभव नहीं है । इस प्रकार के कार्यों में स्वाभाविक रूचि आवश्यक है । शिक्षण अवधि में सभी बालकों को इसका स्पर्श करा दिया जाता था ।

श्रमशाला की शिक्षण पद्धति में दैनिक डायरी लिखने का विशेष महत्व था । डायरी लिखना विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए अनिवार्य था । डायरी शिक्षण का माध्यम था, डायरी छात्र एवं शिक्षक दोनों की प्रगति का मापदंड था । लिखी गई डायरी शिक्षकों द्वारा पढ़ी जाती थी और उसकी समीक्षा की जाती थी । सामान्यत: छात्रों की डायरी में उभरे मुद्दों पर शिक्षकों की बैठक में चर्चा की जाती थी तथा छात्र विशेष एवं छात्र समूह की समस्याओं का समाधान किया जाता था । छात्रों की डायरी शिक्षण पद्धति के निर्धारण में भी मददगार होती थी क्योंकि छात्र अपने दैनिक अनुभव,

कठिनाइयों आदि का उल्लेख करते थे । डायरी व्यक्तिगत मानी जाती है लेकिन यहां व्यक्तिगत डायरी शिक्षा का माध्यम थी । इस कारण हमारी डायरी शिक्षक द्वारा पढ़ी जाती थी । विद्यार्थी आपस में डायरी नहीं पढ़ते थे । यदि आवश्यक समझते तो शिक्षक डायरी की खास बातों का उल्लेख कक्षा में करते थे । डायरी लिखने की गंभीरता पर आज सोचता हूं तो उसके महत्व का अनुमान लगता है। उन दिनों डायरी लिखना कभी-कभी भार भी लगता था क्योंकि वह रोज लिखनी पड़ती थी और शिक्षक द्वारा रोज पढ़ी जाती थी। शिक्षण काल में डायरी स्वचिंतन का माध्यम थी, और दैनिक कार्यों की आत्म समीक्षा का माध्यम भी । दिनभर जो कुछ भी किया,सोचा, चिंतन किया उसको सत्य रूप में लिखना व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है । डायरी में व्यक्तिगत राग द्वेष लिखना शामिल था। मुझे याद है डायरी में शिक्षकों की बुराई, छात्रों में उपजे आपसी राग द्वेष भी शामिल थे। यह शिक्षक का गुण ही मानते हैं कि वे इसका बुरा नहीं मानते थे - वह उनके आत्म चिंतन में सहायक होता था। शिक्षक भी अपनी डायरी लिखते थे और जहां तक मुझे स्मरण है उनकी डायरी पर चर्चा भी होती थी । शिक्षकों की डायरी श्री धीरेन्द्र मजूमदार एवं आचार्य राममूर्ति जी द्वारा पढ़ी जाती थी और शिक्षकों की सभा में उस पर चर्चा होती थी ।

श्रम आधारित श्रम शाला में प्राथमिक शिक्षा जीवन शिक्षण की बुनियाद थी । यह प्रयोग चार वर्षों तक चला । इस प्रयोग की महत्ता उस समय हम छात्रों को नहीं महसूस हुई । जैसे-जैसे समय बीतता गया इस चार वर्ष के शिक्षा प्रयोग का महत्व समझ में आने लगा। इस शिक्षण प्रयोग से जुड़े छात्र एवं शिक्षक आज अपने-अपने क्षेत्र में, अपने जीवन में औरों से भिन्न कार्य कर रहे हैं । कपितय कारणों से यह शिक्षण प्रयोग 1957 में बन्द कर दिया गया और छात्र एवं शिक्षक बिखर गये । लेकिन इस बिखराव के बावजूद छात्र एवं शिक्षकों के आपसी संबंध कायम रहे - आज भी कायम हैं । वर्ष 1957 में एक वर्ष तक छात्र एवं शिक्षक भूदान आन्दोलन में लगे जिसे शिक्षण का अंग माना गया । इस एक वर्ष की गतिविधियों का विश्लेषण अलग विषय है । यहां प्रस्तुत आलेख को यहीं समाप्त करते हुए यह कहना चाहेंगे कि हमारी तालीम की बुनियाद श्रमशाला में पड़ी और परम्परागत मापदण्ड के अनुसार 8 वीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण की । विद्यालय बन्द होने के बाद छात्र एवं शिक्षक आगे का मार्ग खोजने के लिए स्वतंत्र थे ।

अधिकांश छात्र सामान्य विद्यालयों में चले गये । कुछ छात्र ऐसे थे जिनके अभिभावक आगे भी नयी तालीम के विद्यालय में भेजना चाहते थे । उन्हें वर्धा एवं सेवापुरी (वाराणसी) स्थित नयी तालीम विद्यालय में भेजा गया। तालीम की बुनियाद मजबूत हो इस दिशा में अब तक जो भी प्रयोग किये गये उनमें गांधी विचार पर आधारित प्रयोग का योगदान महत्वपूर्ण है । इस प्रयोग में शिक्षण को जीवन की समग्रता की प्रयोगशाला माना गया है । शिक्षा की नींव यदि सुन्दर समाज के मूल्यों पर आधारित हो तो वह व्यक्ति के और इस प्रकार समाज के संतुलित विकास में मददगार होगी। इस संदर्भ में श्रमभारती खादीग्राम के प्रयोग की मुख्य बातें इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैं ।

1. इस प्रयोग में जीवन में शारीरिक श्रम के मूल्य को स्थापित किया गया।

2. शारीरिक श्रम एवं बौद्धिक श्रम को समान महत्व दिया गया । इससे बौद्धिक श्रम का महत्व घटा नहीं बल्कि दोनों का संतुलन कायम हुआ । मेरी राय में शिक्षा में और इस प्रकार व्यक्तिगत जीवन और समाज व्यवस्था में इस प्रकार का यह प्रथम प्रयोग था। गांधी विचार आधारित शिक्षण प्रयोगों के अतिरिक्त अन्यत्र इस प्रकार के प्रयोग का उदाहरण नहीं मिलता है ।

3. शिक्षा का माध्यम समवाय माना गया- श्रम या यों कहें दैनिक जीवन में जो कुछ करते हैं उसी के माध्यम से बौद्धिक शिक्षा देने की पद्धति विकसित की गई ।

4. बालक के समग्र विकास का ध्यान रखा गया ताकि ज्ञान का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहे ।

5. शिक्षा स्वावलम्बी हो और इसलिए शारीरिक श्रम को सबसे अधिक महत्व दिया गया । यह ध्यान रखा जाता कि इसे मजदूरी मानने की गलती नहीं की जाये । यह तो जीवन शिक्षण का अंग है तथा शारीरिक एवं बौद्धिक श्रम के संतुलन के सिद्धांत का आधार है । इस दृष्टि से स्वावलंबी शिक्षा का प्रयोग था ।◆

बुनियादी शिक्षा की तीन बातें जो शायद कुल मिलाकर दो ही बाते हैं यानी शिक्षा का सार्वजनीनकरण किया जाये जो इसके व्यापक प्रसार की बात है । दूसरी जो इसके आंतरिक चरित्र से संबंध रखती है, वह मातृ भाषा में शिक्षा देने की बात है और विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाने की बात है ।

- प्रो. मोहम्मद तालिब, शिक्षा विमर्श/4